# मोहल्ला कक्षाओं ने सहेजी सीखने की ललक

– फ़ैज़/आमिर

**भौं–भौं–भौं की आवाज़ और सहसा एक मालगाड़ी बिलकुल पास से गुज़रती है। सब अपनी अपनी जगह से दूर हट कर कोने में सरक जाते हैं। 2–3 मिनट में माल और सवारी गाड़ी गुज़रते ही फिर बच्चे पटरियों पर खेलने लगते, महिलाएं आंगन में फिर काम शुरू कर देतीं और बकरियां घास चरने में लग जाती हैं। ऐसा दिन में बार–बार होता है और जीवन सामान्य रूप से चलने लगता है। ऐसी ही ट्रेनों के आने–जाने के साथ लगती हैं मोहल्ला कक्षाएं। ये मोहल्ला कक्षाएं है प्राथमिक विद्यालय निशातपुरा में पढ़ने वाले बच्चों की।**

भोपाल से इंदौर की तरफ रेल से जाते हुए, रेलवे स्टेशन से लगभग 2 किमी पटरी के दोनों ओर पन्नी–बांस से बनी झोपड़ियों की एक बसाहट दिखाई देती है। झोपड़ियां सामने से 12–15 फीट की हैं और गहराई में 25–30 फीट। यह बसाहट है आरिफ़ और न्यू आरिफ़ नगर। 80 के दशक में आकार ली हुई इस बसाहट में दोनों तरफ करीब 1000 झोपड़ियां होंगी।

प्राथमिक शाला निशातपुरा के कई बच्चे आरिफ़ नगर में पटरियों के दोनों तरफ रहते हैं। यह बसाहट स्कूल से लगभग 2 किमी दूर बसी हुई है। यहां प्राथमिक विद्यालय निशातपुरा के प्रधानाध्यापक गुप्ता सर और कक्षा 5 की अध्यापिका शहला हसन मैडम पहली बार पहुंचे थे। हमें बच्चों और उनके घरों को ढूँढने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। पटरियों के किनारे लोगों से पालकों व बच्चों का नाम पूछते और आगे बढ़ जाते। लोग पूछते कि कौन सी स्कीम के बारे में बात करने आए हो। काहे का सर्वे कर रहे हो? लगभग 20–25 मिनट घूमने के बाद एक महिला (शाहीन – तैय्यबा की मम्मी) ने सर को पहचाना और दौड़ी–दौड़ी पास आई, और यहीं से मोहल्ला क्लास की भूमिका बनी।

अदीबा और तैय्यबा दोनों इसी स्कूल से पढ़ी हुई हैं। हम लोग तैय्यबा की मम्मी के आग्रह पर इन्हीं के ओटले पर बैठे। पहले दिन (3 नवम्बर 2020) लगभग 10 बच्चे इकट्ठे हुए। इधर–उधर की बातों के बाद बच्चों के स्तर समझने के लिए कक्षा 2 व 4 की गणित व हिंदी 1 घंटे की पहली क्लास के बाद इन्हें हिंदी, गणित और पर्यावरण अध्ययन की वर्कबुक दी गईं जिन पर इन्हें अगली विजिट से पहले काम करना था। सर बातचीत और गतिविधियों का अवलोकन के साथ–साथ दक्षता उन्नयन की वर्कबुक जांचते जा रहे थे। बच्चों के साथ कुछ गतिविधियों के

बाद तैय्यबा की मम्मी से यहां पर सप्ताह में 2 बार बच्चों को इकठ्ठा करने और पढ़ाने पर सहमति बनी। मोहल्ला क्लास के लिए दो जगह तय की गईं। एक जगह अदीबा का घर जो भोपाल से इंदौर की तरफ जाने पर पटरियों के दाएं है और दूसरा पटरियों के बाएं मदरसे के पास।

दूसरी विजिट में आदिबा और तैयबा नाम की 2 लड़कियों को दूसरे बच्चों को पुस्तकें इशू करने और पढ़ाई में मदद कराने के लिए वालंटियर के तौर पर तैयार किया। पहली बार में बरखा सिरीज़ की मात्र 15 पुस्तकें दीं तथा इन्हें इशू कैसे किया जाएगा, बच्चे इन्हें कहां पढ़ेंगे यह सब तैयारियां की गईं।

यहां काम करने के बाद पटरी के दूसरी तरफ बच्चों को एकत्र करने और बैठकर अध्यापन करने की व्यवस्था कराने के लिए लोगों से संपर्क किया। अंततः शुमायला जो कि माध्यमिक शाला निशातपुरा की कक्षा 7 में पढ़ती हैं के पड़ोस में ओटले को दूसरे स्थान के रूप में तय किया। इस जगह पर बच्चों को एकत्र करने की ज़िम्मेदारी शुमायला और शोएब (कक्षा 5) को दी।

जिस जगह पर मोहल्ला क्लास लगती है, उस घर का कोई बच्चा स्कूल में नहीं है। मगर हमारे पहुंचते ही यहां बच्चों के लिए बिछात और शिक्षकों के लिए कुर्सियां लग जाती हैं। इस घर की अम्मा सभी बच्चों को बुलाने के लिए अपने पड़ोस के बच्चों को घर–घर पहुंचाती हैं।

### कक्षा का संचालन

संकरी गली से जैसे ही हम पटरी के किनारे पहुँचते हैं वैसे ही हमें देखकर 2 बच्चे दौड़ लगाते हैं "सर आ गए, सर आ गए"। पटरी किनारे बैठी महिलाएं मुस्कुराकर अभिवादन करती हैं और आवाज़ लगाती हैं "जा कुर्सी ला दे और फट्टी बिछा दे"। 5 से 10 मिनट में 10–15 बच्चे इकट्ठे हो जाते हैं। फट्टी बिछ जाती है, 2–3 कुर्सियां भी लग जाती हैं और बकरियों को दूर बांध दिया जाता है। पढ़ाना शुरू करते हैं तो थोड़ी देर में एक कोयले से भरी मालगाड़ी गुज़रती है। एक व्यक्ति बड़े से बांस को रेल के डिब्बे से सटाता है और कोयला गिरने लगता है। बहुत सारे लोग दौड़ लगाकर कोयला इकठ्ठा करने जाते हैं। अभी पढ़ते–पढ़ते कुछ ही देर हुई है, एक बकरी बच्चों के बीच आ जाती है और सारे बच्चे उसे भगाने में लग जाते हैं।

दूसरी तरफ जहां क्लास लगती है वहीं सटे हुए घर में कैरम के पटिये चलते हैं यानि पैसों से कैरम खेलते हैं। बाहर ताश–पत्ते खेले जाते हैं और कुछ वयस्क होते लड़के मोबाइल पर कुछ खेला करते हैं। बच्चे जब पढ़ने बैठते हैं तो उत्सुकता से पास आ जाते हैं। कुछ अपने साथ वालों का मज़ाक उड़ाते हैं और कुछ किसी न किसी बच्चे की मदद करने लग जाते हैं।

मोहल्ला कक्षाएं के मूल में उन बच्चों को मोहल्ले में जाकर सपोर्ट करना है जिनके पास स्मार्ट फोन की उपलब्धता नहीं है। आरंभिक शासकीय निर्देशों के अनुसार हर शिक्षक को सप्ताह में 3 दिन मोहल्ला क्लास का संचालन करना था। आरिफ़ नगर के अधिकतर बच्चों के माँ–पिता या परिवार में बिरले ही स्मार्ट फोन है जिसमें डेटा नहीं होना या फोन का घर पर नहीं होना एक सामान्य परिस्थिति है।

इन तमाम बातों को ध्यान में रखकर प्राथमिक शाला निशातपुरा के पूरे स्टाफ के साथ आरंभिक चर्चा की जिसमें सप्ताह में एक दिन आरिफ़ नगर व एक दिन ग्रीन पार्क कॉलोनी में मोहल्ला क्लास को सपोर्ट करना तय हुआ। पहले दिन प्रधानाध्यापक गुप्ता सर और शहला हसन मैडम साथ आएंगे यह भी तय हुआ। यह भी तय हुआ कि तय वार/दिन को कक्षा में जाने से पहले निशातपुरा स्कूल में प्रधानाध्यापक व शिक्षिका से फोन तय करेंगे कि यहां कौन–कौन और किस समय पहुंचेगा?

### हमारे अनुभव के अनुसार

एक शिक्षक के तौर पर शिक्षक की प्राथमिकता दक्षता उन्नयन की दिशा में कार्य करना है जो कि वर्कबुक जांचने पर सीमित हो जाती है। वैसे वर्कबुक पर काम बेसलाइन व एंड लाइन टेस्ट के अनुसार तय हुआ है साथ ही आरंभिक निर्देश दक्षता उन्नयन पर केन्द्रित हैं। सैद्धांतिक रूप से इन दोनों बातों में विरोधाभास नहीं है मगर व्यवहारिक रूप से स्थिति बिलकुल उलट है।

इन मोहल्ला कक्षाओं में कक्षा 2 से कक्षा 7 तक के 30–35 बच्चे बैठते हैं। किस बच्चे को किस स्तर का काम देना है या इस दिन क्या करवाना है को तय करने के लिए पिछली बार की एक–एक वर्कशीट या कॉपी का विश्लेषण करते हैं। इस विश्लेषण को शिक्षकों के साथ साझा करते हैं और अपेक्षा करते हैं कि शिक्षक इस काम को ऐसे ही आगे बढ़ाएंगे।

हम लोगों ने भी यही तरीका अपनाया। हम दिए हुए काम का बच्चेवार विश्लेषण करते उससे अपने अगले काम के सूत्र निकालते, दफ्तर आकर सम्बंधित वर्कशीट खंगालते और फिर मोहल्ले में ले जाते। कई बार बच्चे एक पेज काम करके लाते। पहली नज़र में लगता वाह इसने तो कर लिया। थोड़ी देर में समझ आता कि ये तो किसी दूसरे व्यक्ति ने किया है, इसका ये स्तर तो नहीं है। इस बात को शिक्षक से भी करते, शिक्षक कहते– "क्या करें

इन्होंने तो वर्कबुक भी ऐसे ही भरवा दी है"। मगर शिक्षक उस बच्चे के स्तर पर आकर काम नहीं करते। इस बात का आभास शहला हसन मैडम को बस्ती की चौथी विजिट में हुआ और प्रधानाध्यापक तो सिर्फ हस्ताक्षर करने तक सीमित हो गए।

नवम्बर माह में सप्ताह की 2 कक्षाएं और दिसंबर माह में सप्ताह की एक कक्षा के मान से आरिफ़ नगर की मोहल्ला क्लास में जाना नियमित रहा है। इस दौरान अदीबा के पास 8–10 बच्चे रोज़ पढ़ने बैठते थे। जिसमें वो हमारी दी हुई वर्कशीट और बच्चों को वर्कबुक करा रही है। अदीबा को ही 14 बरखा सीरीज़ की पुस्तकें और 4 अदिति की सीरीज़ की पुस्तकें बच्चों के लिए दी थीं, जो दिसंबर के आखिरी सप्ताह में वापस ले ली हैं। अदीबा को लगभग सभी बच्चों के स्तर का अंदाजा है वो बता देती है कि किस बच्चे को क्या कराना है। अदीबा कह रही थी कि "सर इन किताबों से बच्चे पढ़ना सीख गए। इत्ता तो स्कूल में भी नहीं सीखे। आप हमको और किताबें ला देना सब पढ़ना सीख जाएंगे।"

दूसरे केंद्र पर शुमायला के पास 12 बरखा सीरीज़ की पुस्तकें थीं, जो अलग–अलग बच्चों के पास से होकर गुजरी हैं। शुमायला ने नियमित कक्षा तो नहीं लगाई मगर किताबें लेने देने का काम बखूबी किया है।

तैय्यबा ने कहा 'सर अदीबा हमें बच्चों को पढ़ाने नहीं देती'।

अदीबा ने कहा 'सर किताबें हमें दे दीजिए तैय्यबा की मम्मी हमें किताबें नहीं देती, आपने हमें पढ़ाने को कहा था।' तैयबा की मम्मी से लेकर अदीबा को किताबें दीं।

13 नवम्बर 2020

## कुछ अवलोकन

- कई शिक्षक स्वास्थ्य व अन्य कारणों से मोहल्ले जैसी जगह में जाने से बचते हैं।
- मोहल्ला या बस्ती या ऐसी किसी बसाहट में बच्चे और अन्य रहवासी आपसे प्रेम और समानता वाला व्यवहार रखते हैं और आपसे भी यही अपेक्षा करते हैं। ये दया या अधिक संवेदनशील व्यवहार (दिखावटी व्यवहार) पहचानते हैं।
- सीमित संसाधनों के साथ अपने बच्चों की शिक्षा के लिए प्रयासों में किसी तरह की कमी नहीं रहने देते।
- यदि दिए हुए अकादमिक काम को परिवार या पड़ोस के किसी भी सदस्य को बता दिया जाए तो एक बेहतर शिक्षक के रूप में ये मदद करने की कोशिश करते हैं।
- नियमित रूप से मोहल्ले में जाने वाले शिक्षकों से बाकी शिक्षक बैर पाल लेते हैं क्योंकि इनकी वजह से उन्हें भी इस तरह का काम करना पड़ेगा।
- शिक्षकों की समझ अभी बच्चे के स्तर के हिसाब से काम करने की नहीं हुई है। वे कक्षा के अनुसार ही पढ़ाना चाहते हैं भले ही बच्चे किसी भी स्तर पर हों।
- जब आपके पास क्लासरूम का सेटअप नहीं है और बाकी व्यवस्थाएं नहीं हैं तो वर्कशीट काफी बेहतर साधन के रूप में काम करती हैं। इससे हम हर बच्चे को एंगेज कर पाते हैं और बच्चे भी एन्जॉय करते हैं।
- बच्चों को वर्कशीट पर काम करने से "ये काम ऐसे ही कर दिया" वाला अनुभव होता है। वे वर्कबुक पर सहजता से काम करते हैं। इसी के उलट शिक्षकों को वर्कशीट सिखाने के स्तर पर ठीक लगती हैं और वे कक्षा के कनेक्शन में इस काम को नहीं देख पाते जो कि विरोधाभासी है।
- हर बच्चे के स्तर के अनुसार वर्कशीट तैयार कर पाना जटिल उपक्रम होता है। इसके लिए हमने 3–4 बच्चों के स्तर के मान से वर्कशीट ले जाकर काम करना उपयोगी समझा।
- कुछ शिक्षक बड़े दया भाव से बच्चों और उनके परिवारों को देखते हैं और कुछ इस दृष्टि से कि इन बच्चों के माता–पिता श्रम नहीं करना चाहते और झुग्गियों में रहते हैं।

*(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन भोपाल, मध्यप्रदेश से जुड़े हैं)*